सितम्बर 2015

वर्ष 28 द्वितीय अंक

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

9 कृतघ्नी न बनो....

विशेष स्तम्भ

12 समसामयिक सामान्य ज्ञान

17 आर्थिक परिदृश्य

23 राष्ट्रीय परिदृश्य

29 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

32 क्रीड़ा जगत्

35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य

36 विज्ञान समाचार

38 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं

40 सारभूत तत्व कोष

लेख

44 आर्थिक लेख– मुद्रा बैंक : एक महत्वाकांक्षी योजना

45 समसामयिक लेख–(i) डिजिटल इण्डिया, चुनौतियाँ व प्रासंगिकता

47 (ii) वर्तमान भारत-चीन सम्बन्ध : एक विश्लेषण

50 (iii) बांग्लादेश से भूमि समझौता : ऐतिहासिक करार के फलितार्थ

51 कैरियर लेख–एस.एस.बी.

हल प्रश्न-पत्र

55 केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2015

115 आगामी आई.बी.पी.एस. बैंक प्रोबेशनरी ऑफीसर्स (प्रा.) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

यूनाइटेड इण्डिया इंश्योरेंस कं. लि. सहायक भर्ती परीक्षा, 2015

124 तर्कशक्ति परीक्षा

128 English Language

131 आंकिक योग्यता

135 सामान्य ज्ञान

138 कम्प्यूटर ज्ञान

141 आगामी एस.एस.सी. कॉंस्टेबिल भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

146 आगामी उत्तर प्रदेश राजस्व लेखपाल भर्ती परीक्षा, 2015 हेतु विशेष हल प्रश्न

सामान्य/विविध

153 उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा लेखपाल भर्ती परीक्षा, 2015 हेतु ग्राम समाज एवं विकास सम्बन्धी तथ्य

155 ज्ञान वृद्धि कीजिए

156 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

कृतघ्नी न बनो.....

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

भावनाओं के सागर में कृतज्ञता और कृतघ्नता दोनों ही विद्यमान हैं. कृतज्ञता व्यक्ति को सहनशील और परोपकारी बनाती है. जबकि कृतघ्नता व्यक्ति को स्वार्थी, लोभी और आत्मकेन्द्रित बनाती है. जो कृतघ्न होते हैं वे दूसरों की अच्छाइयों, सद्कृत्यों को न तो समझ पाते हैं और न उनका अनुसरण कर पाते हैं. यही उनका प्रारम्भिक बिन्दु होता है. जो उन्हें पराभव की ओर ले जाता है.

अपने घर के वरिष्ठ सदस्य, आपके माता-पिता हों या दादा-दादी, सास-ससुर हों या आपका पति—यदि आप अपने लिए सहयोगी, उपकारी व संरक्षक के साथ रहते हुए उनके उपकारों व सहयोगों के प्रति कृतज्ञ नहीं हैं, तो बहुत संभव है आप अपनी कृतघ्नता के कारण उनके चित्त को ठेस पहुँचा रहे हो. यह भी एक प्रकार की हिंसा तो है ही साथ ही चोरी भी है. कृतघ्नता अर्थात् प्राप्त हो रहे उपकारों व सहयोगों को नकारना, उनको भुलाना, उन्हें अनुपकारी व असहयोगी बताना.

कृतघ्नता का दुर्गुण इंसान को स्वार्थी, ध्वल प्रपंची व संकीर्ण तो बनाता ही है साथ ही सबकी बद्दुआओं को आकर्षित करने वाला पात्र भी बनाता है.

हम सब जरा सोचें कि हमारे सहयोगी, संगी-साथी हमारे लिए कितना कुछ करते हैं. यदि ये पारिवारिक लोगों, मित्र-दोस्तों, गुरुजनों का सतत् सहयोग हमें नहीं मिलता तो क्या हमारा जीवन सुखपूर्ण हो सकता था ? फिर सारे ही रिश्तेदार अपनी-अपनी प्रकृति से जीते हैं. किसी में कोई विशेषता है तो किसी में अन्य कोई..... हम अपने नजरिए से अन्य लोगों को देखते हुए जब उनमें खामियाँ निकालते हैं, उनको दोषपूर्ण या कमियों के भण्डार कहते हैं तो जरा सोचें कि क्या हमारी अपनी दृष्टि ही तो ऐसी नहीं है. हम स्वयं दोषदर्शी व नकारात्मक दृष्टि वाले तो नहीं हैं. वैसे भी ऐसा तो कोई इंसान हो ही नहीं सकता जिसकी जीवन शैली या जिसका व्यक्तित्व देखकर सबकी अपेक्षाएँ पूरी हो जाती हों. यदि वह सबके प्रति सद्भावपूर्ण है तब भी ऐसी बहुत सी उसकी खूबियाँ होंगी जिसे अन्य लोग खूबी न कहकर खामी (कमी) के रूप में देखें.

गौतम बुद्ध जैसे महान् करुणावतार महात्मा की पत्नी भी उनसे जीवन भर नाराज रही. बहुत संभव है वह अपने पति की खूबियों को खामियों के रूप में देखती रही हो. उनका गृहत्याग उसे खलता रहा हो. वह अपने स्वार्थों की पूर्ति में बाधा आने के कारण अपनी सीमित सोच से बाहर सोचने को कभी तैयार ही नहीं हो पाई. माना कि वह पतिरूप गौतम राजकुमार से सदा पति धर्म का पालन हो, ऐसा चाहती थी, एक दृष्टि से उसकी यह अपेक्षा जायज भी है, औचित्यपूर्ण भी है. किन्तु वह अपनी इस अपेक्षा के आईने के सिवाय भी उनका चेहरा देख पाए, यह जरूरी है अन्यथा गौतम बुद्ध का जीवन तो विस्तृत व विकसित होता गया, वे तो बुद्धत्व को उपलब्ध होते हुए सबके लिए मंगलरूप कल्याणरूप बनते गए किन्तु उनकी धर्मपत्नी यशोधरा सदा उन्हें नकारती रही. उनसे अपनी अपेक्षाओं की आपूर्ति का आरोप लगाती हुई स्वयं तनाव में ही रही. वह स्वयं बुद्ध के विराट स्वरूप को देखने से वंचित रही. चाहे सुकरात की पत्नी रही हो या महावीर की वे अपने पति में रहे अन्य महान् सद्गुणों को न देख पाईं और सदा उनके प्रति अपनी नकारात्मक शिकायती नजरिए के कारण अपने आपको दु:खी करती गईं.

●●●